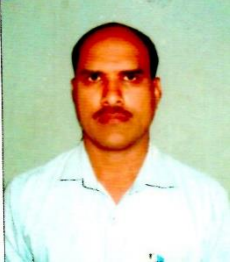


सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन

डॉ० श्रद्धा सिंह

शोध निर्देशक,
एसोसिएट प्रोफेसर
टी०डी०पी०जी० कालेज,
जौनपुर, उ०प्र०



देवेन्द्र कुमार यादव

शोध छात्र,
शिक्षक—शिक्षा विभाग
टी०डी०पी०जी० कालेज,
जौनपुर, उ०प्र०

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन में “सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन” किया गया है। उद्देश्य के रूप में सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में आजमगढ़ जनपद में स्थित उन सभी सरकारी सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को लिया गया है जो वर्तमान समय में शिक्षण के कार्य को सम्पादित कर रहे हैं। शोध कार्य में आजमगढ़ जनपद के सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 10 सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों से 50 शिक्षकों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में शिक्षक-प्रभावशीलता शोध को मापने हेतु प्रमोद कुमार एवं डी०एन० मूथा द्वारा निर्मित— “शिक्षक प्रभावशीलता मापनी” जिसके अन्तर्गत शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के पाँच आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा “जीवन सन्तुष्टि मापनी” का निर्माण डॉ० प्रमोद कुमार एवं डॉ० (श्रीमती) जयश्री ध्यानी द्वारा निर्मित किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु सहसम्बन्ध आघूर्ण गुणांक सांख्यिकी विधियाँ का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्त हुये— सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है। सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है। सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

की-वर्ड— सरकारी, माध्यमिक स्तर, शिक्षक, शिक्षण प्रभावशीलता एवं जीवन सन्तुष्टि

प्रस्तावना— शिक्षा किसी भी राष्ट्र को उसकी सभ्यता एवं संस्कृति की मूलधारा से जोड़ने वाली जीवनीशक्ति है। यह किसी राष्ट्र को विकसित करने तथा उसके उत्थान हेतु स्थायी ऊर्जा प्रदान करने का महत्वपूर्ण साधन

है। यह देश और समाज के लिए सुयोग्य, उपयोगी, संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिकों के निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। भारत जैसे विकासशील देश में माध्यमिक शिक्षा का महत्व विशेष रूप से है। जिस प्रकार से मानव शरीर का महत्वपूर्ण भाग उसका धड़ होता है उसी प्रकार शैक्षिक संरचना का मध्य भाग उसकी माध्यमिक शिक्षा होती है। प्राथमिक व उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण कड़ी माध्यमिक शिक्षा ही है। यही शिक्षा किशोरावस्था की जनशक्ति का स्रोत है। देश के भावी कर्णधार माध्यमिक शिक्षा के ही ढाँचे में बनते और बिगड़ते हैं। सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने की क्षमता इसी स्तर पर विकसित की जाती है। माध्यमिक स्तर का विद्यार्थी न बालक होता है और न बड़ा और वह तेजी से एक स्थिति दूसरी स्थिति में पहुँच रहा होता है। वह वर्तमान मूल्यों को संदेह की दृष्टि से देखता है। वह एक विचित्र आदर्शवाद से ग्रसित तथा संसार का पुनर्निर्माण अपनी इच्छानुसार चाहता है। यह जीवन के आँधी एवं तूफान के दिन है। इस विचित्र एवं नाजुक स्थिति में विद्यार्थियों को उचित निर्देशन एवं मार्गदर्शन केवल और केवल कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक तथा उत्कृष्ट विद्यालयी वातावरण में ही सम्भव है।

वास्तव में योग्य, कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक ही वह धुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया घूमती है। शिक्षक के सामान्य एवं कक्षागत क्रियाकलाप शिक्षक व्यवहार की ओर संकेत करते हैं और इन क्रियाकलापों पर शिक्षक की प्रभावशीलता आधारित होती है। इस सफलता के सन्दर्भ में शिक्षक के प्रति अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिक्रियाएं प्रदर्शित की जाती हैं। ये प्रतिक्रियाएं शिक्षक की प्रभावशीलता को दर्शाती हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता में उसकी शिक्षा तथा सामान्य व तात्कालीन ज्ञान, प्रेरित करने की योग्यता, शिक्षण कौशल, व्यवसाय से सम्बन्धित ज्ञान, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का ज्ञान, कक्षा-कक्ष प्रबन्ध की योग्यता, समाज एवं विद्यालय के अन्य सदस्यों के साथ आपसी मेल-मिलाप का स्वभाव, संवेगात्मक रूप से स्थिर, सलाह, निर्देशन की योग्यता, नैतिक रूप से कुशल तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व को समाहित किया जाता है। इन सब क्रियाओं के प्रति विद्यालय के प्राचार्य, साथी समूह, स्वयं शिक्षक एवं विद्यार्थियों की प्रति क्रियाओं में आमुक शिक्षक की प्रभावशीलता के रूप में प्रेरित किया जाता है।

पूर्व में किये गये अध्ययनों से ज्ञात होता है **अग्रवाल व चंदेल (2009)**¹ ने निष्कर्ष रूप में पाया कि शिक्षक प्रभावशीलता और कृत्य संतोष प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित थे। **जायसवाल एवं गुप्ता (2011)**² ने निष्कर्ष में पाया कि नियमित शिक्षक-शिक्षिकायें अधिक प्रभावशाली थे। इसका कारण उच्च योग्यता, प्रशिक्षण, प्राप्त सुविधायें वेतनमान व वेतनवृद्धि, कार्य सुरक्षा व नियुक्ति प्रक्रिया आदि थे। **अग्रवाल (2012)**³ ने निष्कर्ष में पाया गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में सुधार की आवश्यकता थी तथा संगठनात्मक वातावरण ने शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित किया। **सक्सेना, जे० और सिंह एस०**⁴ (2008) ने अध्ययन में पाया कि प्रभावी शिक्षण करने वाले शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट पाये गये।

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली की सफलता अधिकांशतः उस देश के शिक्षकों की गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। शिक्षकों का उत्तरदायित्व कक्षा में पाठ्य या विषय-वस्तु का शिक्षण ही नहीं वरन् राष्ट्र की चिंतनधारा को बदलने की शक्ति, व्यवसाय, चुनाव, सामाजिक जागरूकता, समाज व देश का विकास पाठ्य सहगामी क्रियाएं नवीन तकनीक की जानकारी देना भी उसका कर्तव्य है।

वर्तमान समय में शिक्षित बेरोजगारी बढ़ने तथा अन्य विकल्प न मिलने पर विवश होकर व्यक्ति अध्यापन कार्य करने लगे हैं। विवशतावश शिक्षक बन जाने पर भी उनके सामने कुछ ऐसे कारक उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे उनकी शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित होती है। उनकी योग्यता क्षमतानुसार उचित पद, सेवा सुरक्षा, वेतन, कार्य दशाएं प्राप्त साधन-सुविधाएं, वातावरण, संगठन का अभाव, सहयोगियों, प्रधानाचार्य, प्रबन्धकों के साथ उचित मानवीय सम्बन्धों के अभाव आदि के कारण शिक्षक कुंठित रहते हैं। परिणामस्वरूप वह अपने शिक्षण कार्य के साथ चाहकर भी न्याय नहीं कर पाते हैं। अतः उचित पर्यावरण एवं सहयोगात्मक

व्यवहार न मिलने से शिक्षकों में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक प्रभावपूर्ण शिक्षण करने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। वे अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का पालन उचित प्रकार से नहीं कर सकेंगे साथ ही शिक्षक विद्यार्थियों को उनके परिवार, समाज व देश के प्रति दायित्वों की जानकारी प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकेंगे, जिसका प्रभाव पूरे शिक्षण एवं राष्ट्र पर पड़ता है। इसलिए एक कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक के लिए अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का होना अति आवश्यक है।

अतः अध्ययनकर्ता ने सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध विषय में अध्ययन किया है।

समस्या कथन

“सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन”।

अध्ययन का उद्देश्य—

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है—

1. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

अध्ययन में उद्देश्य के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है—

1. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।
2. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि—

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या—

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में आजमगढ़ जनपद में स्थित उन सभी सरकारी सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को लिया गया है जो वर्तमान समय में शिक्षण के कार्य को सम्पादित कर रहे हैं।

अध्ययन का न्यादर्श—

शोध कार्य में आजमगढ़ जनपद के सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 10 सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों से 50 शिक्षकों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण—

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में शिक्षक-प्रभावशीलता शोध को मापने हेतु प्रमोद कुमार एवं डी0एन0 मूथा द्वारा निर्मित— “शिक्षक प्रभावशीलता मापनी” जिसके अन्तर्गत शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के पाँच आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि मापनी का निर्माण डॉ0 प्रमोद कुमार एवं डॉ0 (श्रीमती) जयश्री ध्यानी द्वारा निर्मित किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ—

ऑकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु सहसम्बन्ध आघूर्ण गुणांक सांख्यिकी विधियाँ का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य—1 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन—

H₁ सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध है।

H₀₁ सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या—1

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह-सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह-सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
शिक्षण प्रभावशीलता एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3289	.05

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या—1 से स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.3289 है जो .05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् शिक्षण प्रभावशीलता में कमी या वृद्धि का उनके जीवन सन्तुष्टि में कमी या वृद्धि से सम्बन्धित है।

उद्देश्य—2 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन—

- H₂** सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध है।
- H₀₁** सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या-4.2

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह-सम्बन्ध गुणांक

शिक्षण प्रभावशीलता के आयाम तथा जीवन सन्तुष्टि	N	सह-सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
शैक्षिक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.2518	.05
व्यावसायिक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3218*	.05
सामाजिक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3409*	.05
संवेगात्मक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.2044	.05
नैतिक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3968*	.05
व्यक्तित्व एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3383*	.05

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या-2 से स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.3218, 0.3409, 0.3968 एवं 0.3383 है जो .05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् शिक्षण प्रभावशीलता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व में कमी या वृद्धि का उनके जीवन सन्तुष्टि में कमी या वृद्धि से सम्बन्धित है।

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.2518 एवं 0.2044 है जो .05 स्तर पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक में कमी या वृद्धि का उनके जीवन सन्तुष्टि में कमी या वृद्धि से सम्बन्धित नहीं है।

निष्कर्ष—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये—

1. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।
2. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।
3. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सुझाव—

अध्यापक तभी अपने छात्रों का सर्वांगीण विकास करने में सफल नहीं होता है जब तक वह अपने शिक्षण को प्रभावी ढंग से न प्रस्तुत करे, और यह तभी सम्भव है जब तक वह अपने जीवन से संतुष्ट न हो। विभिन्न कारक शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उसकी जीवन संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। शिक्षा की गुणवत्ता बनी रहे उसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक अध्यापन कार्य को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार करे। वर्तमान में शिक्षकों की दशा में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है जिससे वह अपने व्यवसाय के प्रति न्याय कर सके।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, एस. व चंदेल, एन.पी.एस. (2009) अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके कृत्य संतोष पर प्रभाव का अध्ययन, **परिप्रेक्ष्य**, वर्ष 16, अंक 3, दिसम्बर 2009 पृष्ठ संख्या 53-66.
2. जायसवाल, वी. व गुप्ता, पी. (2011) नियमित शिक्षक-शिक्षिकाओं व शिक्षामित्रों के मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उनकी प्रभावशीलता का अध्ययन, **वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य**, वाल्यूम-1, नम्बर-1 जून 2011, पृष्ठ सं. 31-42.
3. अग्रवाल, एस. (2012) अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, **शिक्षा चिंतन**, त्रिमूर्ति संस्थान, अक्टूबर-नवम्बर पृष्ठ संख्या 14-22.
4. शिक्षा चिन्तन (2008), शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान, नई दिल्ली; वर्ष 15, अंक 3, पृ. सं. 81-88.